भूमिका

प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक, मानसिक, ऋणता, जनसाधारण की कठिनाईयाँ, आत्मनिर्वासन, अजनबीपन और अकेलेपन की अनुभूतियाँ उपन्यासों का विषय था। ऐसे उपन्यासों में उपन्यासकारों ने तटस्थता के साथ मूल्यांकन करके बेकारी, आर्थिक तंगी, भ्रष्टाचार, मकान की समस्या, युवाविद्रोह, गुंडागर्दी, शोषक, शोषित, अशिक्षा समाज की रूढीयाँ परंपरा से ग्रस्त लोग, बदलते सामाजिक मूल्य ऐसे विषयों को प्रस्तुत किया है। इस दृष्टी से उल्लेखनीय उपन्यासकार है- यशपाल, राजेंद यादव, मन्नू भंडारी, जगदम्बा प्रसाद, जैनेंद्र, देवेश ठाकुर, मुद्राराक्षस।

मुद्राराक्षस के उपन्यास "भगौडा", "शोकसंवाद", "शान्तिभंग" में ग्राम, नागरी परिवेश में स्थित वास्तविकता प्रस्तुत की है। मध्य, निम्न वर्ग का व्यक्ति जीवन, नारी जीवन संदर्भ, उनकी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिस्थित को सजीवता से एवंम अत्यंत मार्मिकता से प्रस्तुत किया हैं। उन्होंने अपने जीवन में शोषकों का विरोध किया, शोषितों के पक्षधर रहे, हमेशा अन्याय का सामना किया। समाज में स्थित वास्तविकता को अच्छाईयों को, बुराईयों को उन्होंने खुद अनुभव किया हैं। इसी अनुभव की सजीव अभिव्यक्ती उनके उपन्यासों में हमें दिखाई देती हैं।

बचपन से मुझे पढने का,रेडिओपर गीत एवंम एकांकी सुनने का बडा शौक था। अक्सर रेडिओ एकांकी सुनकर मैं स्कूल में मेरी सहेलियों को सुनाती थी। मेरे पढने के शौक के कारण मेरे घरवाले मुझे कभी कभी डाँटते थे। कॅालेज में दाखिल होनेपर मेरा यह शौक और भी बढ गया। मैने कई उपन्यास, नाटक, एकांकी, पत्रिकाओं को पढा। जब मैने मुद्राराक्षस के नाटक पढे, तो उनके उपन्यास पढने की जिज्ञासा मेरे मन में निर्माण हो गयी। मुद्राराक्षस की "भगोडा", "शोकसंवाद", "शान्तिभंग" उपन्यास पढनेपर ग्राम एवंम नागरी जीवन के प्रति और मध्य तथा निम्न वर्ग को जानने की दिलचस्पी मेरे मन में निर्माण हो गई। क्योंकि मेरा जन्म, बचपन, पढाई, शहरों में हुई

इस कारण ग्राम जीवन एवंम निम्न वर्ग से मेरा व्यक्तित्व हमेशा अछुता रहा।

मुद्राराक्षस के उपन्यासों का अध्ययन करने के बाद निम्न सवाल मेरे आँखों के सामने मँडराने लगे।

१. ग्राम एवंम नागरी परिवेश में रहनेवाले व्यक्तियों का जीवन कैसा होता है ?
२. शिक्षा के अभाव के कारण ग्राम परिवेश में आज भी नारी की अवस्था कैसी है?
३. ग्राम एवंम नागरी परिवेश में समाज जीवन कैसा होता है?
४. अशिक्षा, अर्धशिक्षित, एवंम परंपरागत व्यवसाय करने से ग्राम में स्थित लोगों की आर्थिक स्थिती कैसी होती है?
५. क्या इन लोगों का देश की राजनीति से संबंध होता है ?

इन सवालों को हल करने के लिए मुझे मेरे गुरूवर्य अध्यापक डॉ.निकमजी ने सहाय्यता प्रदान की। उन्होंने मुझे इस लघु-शोध-प्रबंध का मार्ग बताया और मेरी समस्याओं के साथ मेरा अध्ययन क्षेत्र विस्तृत करने की उन्होंने मुझे प्रेरणा दी। इन्ही समस्याओं को हल करने के रूप में मैंने मुद्राराक्षस के उपन्यासों में जीवन संदर्भ यह लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत किया है। अध्ययन की सुविधा के लिए इसे मैंने सात अध्यायों में विभाजित किया है।

एस.जी.एम. कॉलेज, कराड के डॉ.शिवाजी निकम की प्रेरणा, शुभाशंसा, प्रोत्साहन तथा विद्वतापूर्ण निर्देशन का प्रतिफल यह मेरा शोध कार्य है। पग पग पर मुझे उनका मार्गदर्शन तथा प्रोत्साहन मिला। इसलिए उनके प्रति मैं सदा ऋणी रहूँगी।

इस शोध-संकल्प की पूर्ति में जिनसे मुझे प्रोत्साहन मिला, मुझे सहाय्यता प्रदान की वे शिवाजी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ.पांडुरंग पाटील, डॉ.वसंत मोरे, डॉ.अर्जुन चव्हाण के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

प्राचार्य बी.एल्.शिंदे, जिन्होंने मुझ शोध कार्य के लिए बडा सहयोग दिया। प्रा.बी.डी.कदम जिन्होंने मुझे सामग्री संवर्धन में पूरा सहयोग दिया और प्राचार्य डॉ.सांगले इनकी सहाय्यता मेरे शोध कार्य में महत्वपूर्ण है।

मेरे स्वर्गीय परमपूज्य पिताजी श्री जगन्नाथ पिंजारी और माताजी सौ.केराबाई पिंजारी इनके आशिर्वाद एवंम शुभकामनाएँ इस शोध कार्य की पुर्ती में विद्यमान है। उनके ऋण में रहना मैं सदा पसंद करूँगी। उनके प्रति मेरी अपार श्रध्दा विनयागत है।

जिनसे मैंने किसी न किसी रूप में सामग्री ग्रहण की है, उन सभी लेखकों की पुस्तक रचनाओं की मैं आभारी हूँ।

इस लघु शोध प्रबंध का आत्मीयता और तत्परता से सुचारू रूप में प्रबंध टंकन-लेखन करने वाले **रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग , सातारा** के श्री.मुकुन्द ढवलेजी और उनके सहायक श्री.राजू कुलकर्णी भी धन्यवाद के पात्र है।

प्रा.विजया जगन्नाथ पिंजारी
अनुसंधाता